आचार्य रामचंद्र शुक्ल के निबन्ध : अन्तर्वस्तु एवं शैली

अंजु बाला,
सहायक प्रवक्ता,
एफ°सी°कॉलेज, हिसार।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल जन्म ११ अक्तूबर १८८४ ईस्वी और मृत्यु २ फरवरी १९४१, हिन्दी साहित्य में मनोवैज्ञानिक निबन्धकार के रूप में जाने जाते हैं। उनके निबन्ध जीवन के महत्वपूर्ण संप्रत्ययों की व्याख्या करते हुए पाठक को जीवन और जगत के यथार्थ से साक्षात्कार कराते हैं। उनका व्यक्तित्व और लेखन निबन्ध कला की दृष्टि से बहुचर्चित रहा है। निबन्धकार की भूमिका का निर्वहन करते हुए आचार्य शुक्ल ने हिन्दी साहित्य को सुंदर और श्रेष्ठ निबन्ध प्रदान किए हैं। पाठक के समक्ष सूक्ष्म विश्लेषण, विवेचन, गम्भीर विचार परम्परा, समर्थ भाषा उनकी निबन्धावली की विशेषताएं है। शुक्ल जी सामान्य परिवार में पैदा हुए थे, इनका बचपन सामान्य ग्रामीण आँचल में व्यतीत हुआ था। पढ़ाई में सामान्य थे, अतः वकालत और तहसीलदारी में सफल नहीं हो पाए। घर में धार्मिक वातावरण होने के कारण राम, रामचरित मानस और तुलसीदास के प्रति अटूट निष्ठा थी। निबन्ध कला और लेखन प्रक्रिया में आप भारतेन्दु जी से प्रभावित थे। योग्यता और प्रखर लेखन शैली के कारण आपको संवत् १९६७ में काशी नागरी प्रचारिणी सभा में हिन्दी शब्दसागर का सह-संपादक नियुक्त किया गया और तत्पश्चात् काशी विश्वविद्यालय में हिन्दी प्राध्यापक पद पर कार्य किया। निर्भिकता और आत्मविश्वास इनके साहित्य में विशेष रूप से देखा जा सकता है। निबन्ध, हिन्दी साहित्य में प्राचीन परम्परा का नाम है। निबंध में तार्किक और बौद्धिक परम्परा का उल्लेख किया जाता है। ''शाब्दिक रूप से निबन्ध संस्कृत साहित्य की देन है।''[१] इसकी व्याख्या के रूप में कहा है, ''निबंधातीति निबंध''[२]। धातु के अर्थ नि+बँध+ल्यूट अर्थात् वह निबन्ध है जिसमें विचारों का निबंधन हो। पुराने काल में निंबंध शब्द द्रव्य और औषधि के रूप में भी प्रयोग किया जाता था परन्तु साहित्यिक रूप में वैचारिक सृष्टि को निबन्ध कहा जाता है। निबंध शब्द को अंग्रेजी में 'म्ल' कहा जाता है। मूलतः 'म्ल' शब्द अंग्रेजी की फ्रैंच भाषा की देन हैं, फ्रैंच भाषा में 'म्ल' का अर्थ विचार प्रवाह की वह स्थिति है, जिसमें पाठक अपने-आपको रसांदित पा लेता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने निबंध के बारे में लिखा है,''आधुनिक पाश्चात्य लक्षणों के आधार पर निबन्ध उसी को कहना चाहिए जिसमें व्यक्तित्व अर्थात व्यक्तिगत विशेषता हो।''[३]

श्री गुलाब राय कहते हैं, ''निबंध उस गद्य रचना को कहते हैं जिसमें सीमित आकार के भीतर किसी विषय का वर्णन या प्रतिपादन एक निजीपन, स्वछंदता, सौष्ठव और सजीवता तथा आवश्यक संगति और संबद्धता के साथ किया हो।''[४] डॉ° श्याम सुन्दर दास कहते हैं, ''निबंध उस लेख को कहना चाहिए जिसमें किसी गहन विषय पर विस्तारपूर्वक विचार किया गया हो,''[५] इस दृष्टि से आचार्य शुक्ल के लेखों ने अपना स्वामित्व स्थापित किया। उनका सर्वप्रथम निबंध लेख 'विचार और विथि' बहुत लोकप्रिय हुआ। इसके पश्चात् 'चिंतामणि' का प्रकाशन हुआ जिसमें कई निबन्ध कई रूपों में संकलित है। मुख्यतः आचार्य रामचंद्र शुक्ल के निबंध दो प्रकार के हैं- पहले वे, जिनको मनोविश्लेषणात्मक निबंध की संज्ञा दी जा सकती है और दूसरे, वे जिनको सृजनात्मक निबंध कहा जा सकता है। ''चिंतामणि भाग एक'' में उत्साह, श्रद्धा-भक्ति, भय, क्रोध मनोविकार के संप्रत्यय को

स्पष्ट करते हैं जबकि यहाँ उनके उन निबंधों की बात करना संगतियुक्त रहेगा जिनकी अंतर्वस्तु समीक्षात्मक हैं। शुक्ल जी के निबंधों की समीक्षात्मक स्वरूप को भी दो श्रेणियों से समझा जा सकता है- सैद्धांतिक समीक्षा और व्यावहारिक समीक्षा। उदाहरण स्वरूप 'कविता क्या हैं', 'साधारणीकरण और व्यक्ति वैचित्र्यवाद' 'काव्य में लोकमंगल की साधनावस्था' और 'रसात्मक बोध' आदि। व्यावहारिक समीक्षा में 'भारतेन्दु हरिशचन्द्र', 'तुलसी का भक्ति मार्ग' और 'मानस की धर्मभूमि'। इन निबंधों में आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने उन सभी बातों की व्याख्या को सरलता के साथ रूपायित किया है जिसमें सिद्धांत और कसौटियों के मध्य पाठक उलझ जाते हैं। इस सम्बन्ध में बाबू गुलाब राय लिखते है, ''व्यावहारिक समीक्षा संबंधी निबंधों का उनके सैद्धांतिक निबंधों में समन्वयसिद्धता तथा मौलिक सिद्धांतों का सहारा लेकर विभिन्न प्रकार के संप्रत्ययों की सहआलोचना प्रस्तुत की गयी है, शुक्ल जी के ऐसे निबन्धों ने ही हिन्दी में विचारपरक, व्यवस्थित, सूक्ष्म और संयमित निबन्ध शैली को जन्म दिया।''[६] 'चिंतामणि' आचार्य शुक्ल की निबंध कला का श्रेष्ठ उदाहरण है। इसके प्रथम दो भाग पहले प्रकाशित किये गए है। बाद में इसका तीसरा भाग भी प्रकाशित किया गया था। भाग एक में भाव और मन के विकार, जिनका उल्लेख हम ऊपर कर आये हैं तथा अन्य दूसरे निबंध है। दूसरे और तीसरे भाग में मिले-जुले निबंध है।''

चिंतामणि की भूमिका में स्वयं शुक्ल जी कहते हैं, ''इस पुस्तक में मेरी अंतर्यात्रा में पड़ने वाले कुछ प्रदेश हैं। यात्रा के लिए निकलती बुद्धि हृदय को साथ लेकर अपना रास्ता निकालती रही, जहाँ कही मार्मिक या भावार्षक स्थलों पर पहुंची है, वहाँ हृदय थोड़ा बहुत रमता अपनी प्रवृति के अनुसार कुछ कहता गया।;''[७] अस्तु आचार्य शुक्ल जी के निबंधों की अन्तर्वस्तु से उनकी विश्लेषण बुद्धि का पूरा परिचय प्राप्त होता है। 'चिंतामणि' में संकलित सभी निबंध तथा अन्य निबंध विषय प्रधान हैं, साथ ही विश्लेषण परकता का प्रवाह भी स्पष्ट दृष्टव्य है। ऐसे दुरूह विषयों का साधारणीकरण बताता है कि शुक्ल जी मानों, जड़ को सींचना जानते हों। आचार्य के निबंधों के सम्बंध में डॉ॰ रामबिलास शर्मा जी लिखते है, ''भाव संबंधी जो कुछ मनोवैज्ञानिक सामग्री शुक्ल जी को अध्ययन से मिली, उसका प्रयोग उन्होंने रस व्याख्या की दृष्टि से भाव निरूपण के संदर्भ में किया है।''[८] शुक्ल जी के विषय दुरूह होने के पश्चात् भी नीरस नहीं है। आवश्यकतानुसार मार्मिक और भावार्षक स्थलों पर उनकी कलम चुहलबाजी करती दिखाई देती हैं। कहीं व्यंग्य और कहीं विनोद उनके लेखन में सामंजस्य बनाकर चलता है। 'चिंतामणि' के किसी भी निबंध को देखते है तो उनका यह स्वरूप हर निबंध मे मिल जाता है। 'लज्जा और ग्लानि' का उदाहरण प्रस्तुत है जो व्यंग्य और विनोद की प्रतीति कराता हुआ दिखाई देता है, ''लज्जा मनोवेग के मारे लोग सिर ऊंचा नहीं करते, मुँह भी नही दिखाते, सामने नहीं आते और जाने क्या-क्या नहीं करते। हम बुरे न समझे जाएं, यह स्थायी भावना जिसमें जितनी अधिक होगी, वह व्यक्ति उतना ही लज्जाशील होगा। कोई बुरा कहें, या कोई भला कहे, इसकी परवाह करके जो काम किया करते है, वो ही निर्लज्ज कहलाते है।''[९]

इसी प्रकार 'ईर्ष्या' निबंध में भी इसी तरह का उदाहरण प्रस्तुत किया गया है, ''जैसे दूसरे के दुःख को देखकर, दुख होता है, वैसे ही दूसरे के सुख या भलाई को देखकर एक प्रकार का दुख होता है, इसे ईर्ष्या कहते हैं। 'ईर्ष्या' की उत्पति कई भावों के संयोग से होती है..... दूसरे के काम ना आए अर्थात् उसकी स्थिति मुझसे अच्छी न रहे, यही तो ईर्ष्या है।''[१०] शुक्ल जी का व्यंग्य आधुनिकता के साथ सार्वभौमिक व्याख्या भी करते है। क्योंकि मनोविज्ञान केवल एक वस्तुस्थिति का वर्णन ही नहीं करता, बल्कि सम्पूर्ण स्थिति और व्यवहार का मापन भी करता है।

शुक्ल जी के निबन्धों की अन्तर्वस्तु व्यक्ति प्रधान होने पर भी भाव शून्य नहीं है। व्यक्ति प्रधान इसलिए कहा जा सकता है क्योंकि उनके निबंधों में मौलिकता के पर्याप्त दर्शन होते हैं जो इनके व्यक्तित्व की छाप है। बुद्धि और हृदय का समुचित संयोग के साथ वैचारिक क्रमबद्धता का स्पष्ट प्रयोग किया हैं। इसके साथ संक्षेपण भी देखने को मिलता हैं, उदाहरण के लिए एक बानगी प्रस्तुत हैं ''यदि लोभ की वस्तु ऐसी है जिससे सबको सुख और आनंद है तो उस पर जितना अधिक ध्यान रहेगा, रक्षा के भाव की एकता के कारण परस्पर मेल की उतनी ही प्रवृत्ति होगी।''[99] शुक्ल जी के निबंध परिणत प्रज्ञा की उपज है। जिन पहलूओं का मानव जीवन से संबंध रहा है, उन्हीं के अनुरूप शुक्ल जी ने अपनी लेखनी चलाई है सामाजिक और मानवीय अर्थवता हेतु सृजन शुक्ल जी का उद्देश्य रहा है। उन्होंने अपनी प्रज्ञा का प्रयोग कर मानव जीवन पर गहन अनुसंधान किया और निष्कर्ष स्वरूप सृजन कर साहित्य के हेतु को प्राप्त किया। उनका मानना था कि साहित्य की सभी विधाएं श्रेष्ठ है परन्तु निबंध सर्वश्रेष्ठ है। ''यदि गद्य कवियों की कसौटी है तो निबंध गद्य की कसौटी है।'' उनके निबंध पारदर्शी एवं सामाजिक मर्यादा का बोध कराते हैं, आदर्श और आस्थाओं का मूल स्वर है। उदाहरणों के माध्यम से विभिन्न तथ्यों का निरूपण हुआ है।

शैली की दृष्टि पर विचार किया जाए तो सबसे पूर्व भाषा की बात आती हैं शुद्ध खड़ी बोली, व्याकरण सम्मत है। सदैव विषय के अनूकूल एवं भावानुगामिनी दिखाई पड़ती हैं संस्कृतनिष्ठ तत्सम शब्दावली का प्रयोग पाठक को अनायास ही अपनी ओर आकर्षित कर लेती है। यह केवल तत्सम शब्दावली की बात नहीं है, उर्दू-फारसी, देशी और दूसरे विदेशी शब्दों का भी खुलकर प्रयोग किया है। शुक्ल जी की निबंधावली की भाषा परिपक्व प्रतीत होती है। प्रौढ़ता, संयतता, परिष्कृत, सशक्त और व्यावहारिक स्वरूप इनकी भाषा के उदाहरण है। एक सामर्थ्यवान भाषा पर अधिकार होने के साथ शुक्ल जी ने अपनी भाषा में मुहावरे, लोक- उक्ति का सौष्ठव भी प्रयुक्त किया। वाक्य रचना सरल एवं शब्द योजना सटीक प्रतीत होती है। इससे भाषा में विषयानुकूल प्रभाव स्पष्ट लक्षित होता है। कई स्थानों पर शुक्ल जी ने बड़े वाक्यों का भी प्रयोग किया है परन्तु विराम चिह्नों के प्रयोग से उनको भावयुक्त एवं बोध गम्य बना दिया है।

जैसा कि हम ऊपर कह आए है कि शुक्ल जी के निबंध शास्त्रबद्ध न होकर मौलिक हैं। हां, यह अलग है कि शुक्ल जी का व्यक्तित्व भारतेन्द्र हरिश्चन्द्र से प्रभावित है। अतः इस निबंध में प्रत्येक तथ्य को इन्होंने तर्कपूर्ण तरीके से कहा है। यहाँ आगमन पद्धति की तुलना में निगमन पद्धति का प्रयोग अधिक हुआ है। वे आरम्भ में सिद्धांत रूप में अपनी बात कहते हैं और उदाहरण देकर उस तथ्य को स्पष्ट करते है। समास शैली के प्रयोग के साथ सूत्र शैली उनके व्यक्तित्व की अन्यत्र विशेषता है, जो उनके निबंधों में बिखरी पड़ी है। कुछ विद्धान मानते हैं कि उनके निबंध का अभिव्यंजना पक्ष अंग्रेजी साहित्य से प्रभावित है। यहां कहना होगा कि शुक्ल जी एक अच्छे लेखक होने के साथ-साथ अच्छे पाठक भी रहे है। उन्होंने विभिन्न भाषाओं के साहित्य का अध्ययन किया जो स्वभावतः उनके लेखन में आ गया।

शुक्ल जी के निबंधों को लेकर संक्षेप में कहा जा सकता है कि निबंध के क्षेत्र में गूढ़ विवेचन और सूक्ष्म विश्लेषण को रूपायित करने का श्रेय स्वयं शुक्ल जी को ही है। विद्धानों ने माना है कि शुक्ल की शैली परिपाटी की न होकर वस्तुपरक रही है जो किलष्ट, जटिल, सरल तथा व्यावहारिक रही है। विषय गम्भीर है तो गम्भीरता आ गयी। और विषय सरल है तो सरलता आ गयी। और व्यवहारिक है तो व्यवहारिकता आ गयी। वस्तुतः अत्यंत संयत परिमार्जित, प्रौढ़ और मंजे हुए शुक्ल जी के विषय में यह सत्य है कि हृदय से कवि, मस्तिष्क से आलोचक और जीवन से अध्यापक, आचार्य रामचंद शुक्ल हिन्दी निबंध साहित्य

के देदिप्यमान नक्षत्र है, जो अपने निबंधों के माध्यम से आने वाली पीढ़ी का मार्गदर्शन करते रहेंगे।

संदर्भ :-

१. निबंध उत्पति और स्वरूप, डॉ° प्रमोद माथुर, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, १९७०, पृ. २३
२. निबंध नवनीत, डॉ° लक्ष्मी सागर, वार्ष्णेय, विश्वविद्यालय प्रकाशन, गोरखपुर, १९५७, पृ° २२
३. वही,
४. वही,
५. वही,
६. आचार्य रामचंद्र शुक्ल, प्रदीप कुमार सिंह, सरस्वती प्रकाशन, बम्बई, २०१८, पृ° ७३
७. 'चिंतामणि' आचार्य रामचंद्र शुक्ल, इंडियन प्रैस इलाहाबाद, पृ° भूमिका
८. आलोचना के मान, शिवदान सिंह चौहान, स्वराज प्रकाशन, दिल्ली, पृ° ७३
९. 'चिंतामणि' आचार्य रामचंद्र शुक्ल, इंडियन प्रैस इलाहाबाद, पृ° २७
१०. वही, पृ° ३२
११. वहीं, पृ° ३७